दया और प्रेम के गौरवमयी 100 साल

अजायब बानी

मासिक पत्रिका

अगस्त-2026

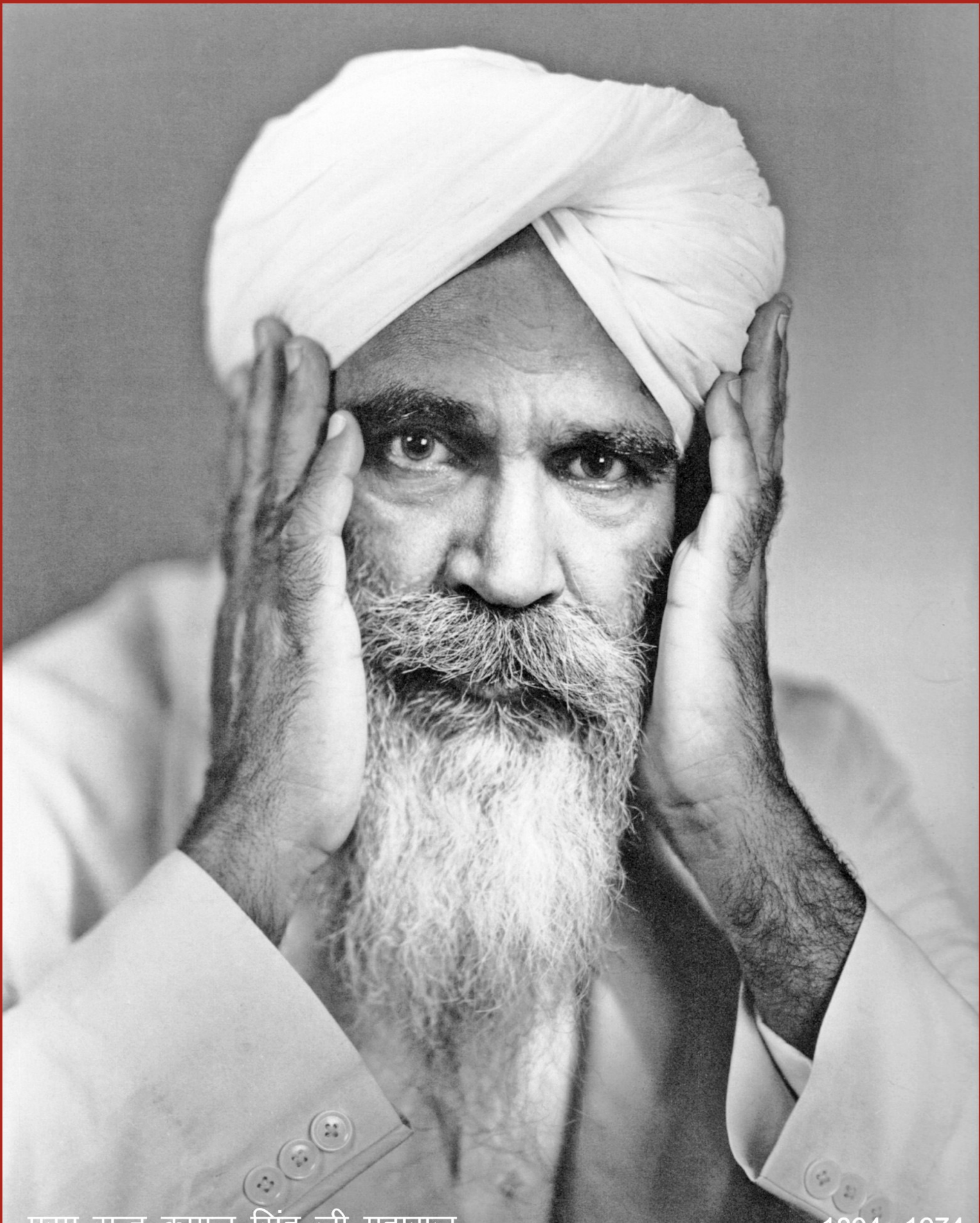

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

1894–1974

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–चौबीसवां | अंक–चौथा | अगस्त–2026

- सानूं भुल्लयां नूं रस्ते पाया (शब्द) 2
- जाति पाति-(सतसंग) 3
- सच्चा उपदेश 25
- किड्स कॉर्नर-जाको राखे साईयां 29
- अनमोल वचन 31
- धन्य अजायब 32

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग :**सुखपाल कौर नौरिया**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 293 Website : www.ajaibbani.org

RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

सानूं भुल्लयां नूं रस्ते पाया

सानूं भुल्लया नूं रस्ते पाया, धन कृपाल गुरु जी, X 2

1. जप–तप कीते धूणे तपाऐ, जल धारे करके तीर्थ न्हाऐ, X 2
औजड़ जांदेयां नूं रस्ते पाया,
धन कृपाल गुरु जी .....

2. कर्मकांड सब कर–कर हारे, भेष वटाऐ न्यारे–न्यारे, X 2
तैथों बिना किसे दुख ना वंडाया,
धन कृपाल गुरु जी .....

3. कोई ना जग विच रेहा सहारा, कित्थों लब्भ जाऐ प्रीतम प्यारा, X 2
आखिर तरस पीया नूं आया,
धन कृपाल गुरु जी .....

4. अंदर जावां बाहर आवां, नूर इलाही देखना चाहवां, X 2
भाग तत्तड़ी दे घर नूं लाया,
धन कृपाल गुरु जी .....

5. बिरहों दा दुखड़ा वड–वड खावे, 'अजायब' दी कोई पेश न जावे, X 2
वैद्य बण कृपाल घर आया,
धन कृपाल गुरु जी......

सतसंग- परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

जाति-पाति

DVD-173

19 जून 1991 गुरु अर्जुनदेव जी की बानी दिल्ली

मैं अपने गुरुदेव परमात्मा सावन-कृपाल का धन्यवादी हूँ जिन्होंने इस गरीब आत्मा पर अपनी अपार दया की। उन्होंने इस प्यासी आत्मा को नाम का पानी देकर शान्त किया। सच्चाई तो यह है कि हम सच्चा धन्यवाद अंदर जाकर ही कर सकते हैं। सन्त-महात्मा संसार में आकर सदा ही उस प्रभु का गुणगान करते रहे।

मैं रोज ही बताया करता हूँ कि महात्मा न कोई समाज बनाने के लिए आते हैं और न पहले की बनी हुई समाजे तोड़ने के लिए आते हैं। वे सारे संसार को अपना घर समझते हैं, सब समाजों को अपना समझते हैं। वे हमें सदा यही कहते हैं कि आप अपनी-अपनी समाजों में रहें, अपने समाजों के रीति-रिवाज भी करें लेकिन आप उस परमात्मा के लिए भी समय निकालें फिर हम यह कहेंगे कि हम परमात्मा के लिए समय निकालते हैं। हम जप-तप करते हैं, पूजा-पाठ करते हैं और हमने अपने जो धर्मस्थान बनाए हैं, हम उनमें भी जाते हैं। सन्त हमें किसी रीति-रिवाज से भी नहीं हटाते लेकिन वे सच्चाई जरूर बयान करते हैं कि आप अंदर जाकर सच्चाई को देखें।

सन्त-महात्मा हमें बताते हैं कि हमने बाहर जो मंदिर बनाए हैं हम उनकी बहुत सफाई करते हैं, वहाँ रोज जाना भी अच्छा समझते हैं, वहाँ कोई बुरा कर्म नहीं करते लेकिन जो मंदिर, ठाकुर द्वारा या गुरुद्वारा उस परमात्मा ने बनाया है, हमने उसकी तरफ कभी नहीं झाँका और न ही उसकी सफाई की तरफ ध्यान दिया है। हम विषय-विकारों, शराबों-कबाबों और निन्दा-चुगली से उसे बिगाड़े बैठे हैं। गुरु अमरदेव जी महाराज कहते हैं:

हरि मंदिर ऐहो शरीर है ज्ञान रतन प्रकट होय।

भाई, अगर कोई सच्चे से सच्चा हरि मंदिर है तो वह तुम्हारा शरीर, देह और वजूद है। तुम्हें जब भी मालिक से मिलने का ज्ञान होगा, वह अंदर जाकर ही होगा। यह शरीर हड्डी, चमड़े और माँस का ही नहीं, यह शरीर परमात्मा के रहने की गुफा है। हमने सबसे पहले यह सोचना है कि सन्त–महात्मा कहाँ से आते हैं, वे क्या काम करते हैं और संसार में क्या मिशन लेकर आते हैं?

सन्त–महात्मा मालिक के प्यारे सच्चखंड से आते हैं, वे हम बिछुड़ी हुई आत्माओं को 'नाम' के साथ जोड़ते हैं। हम उस नाम को न आँखों से देख सकते हैं, न कानों से सुन सकते हैं। सन्त–महात्मा हमें अंधविश्वास देने के लिए नहीं आते। वे हमें प्यार से कहते हैं कि आप अंदर जाकर उस सच्चाई को खुद देखें।

जब हम महात्मा के दिए हुए नाम की कमाई करते हैं, फैले हुए ख्याल को आँखों के पीछे लाते हैं, उनकी बताई हुई युक्ति के मुताबिक जिस स्थूल शरीर में आज हम बैठे हैं, इसे छोड़कर सूक्ष्म में जाते हैं वहाँ सतगुरु का स्वरूप नूरी है। जब हम ब्रह्म में जाते हैं तो गुरु का स्वरूप 'शब्द' है। जब हम पारब्रह्म में जाते हैं तो हमारी आत्मा से तीनों गुण, पच्चीस प्रकृतियां और मन–माया के सारे पर्दे उतर जाते हैं, आत्मा का पूरा प्रकाश हो जाता है। वहाँ जाकर पता लगता है कि हम समाजों में जकड़े हुए थे, हमारी आत्मा एक रूहानी तोता है। यह आत्मा किसी समाज का जीव नहीं इसका वही गुण, वही समाज और वही स्वभाव है जो परमात्मा का है।

मैं बताया करता हूँ कि हम बाहर तो जरूर झगड़े खड़े कर लेते हैं कि मैं हिन्दू हूँ, मैं सिख हूँ, मैं इसाई या मुसलमान हूँ लेकिन जो सन्त–महात्मा वहाँ पहुँच जाते हैं, वे हमें बताते हैं कि जब सूरज की कोई जाति नहीं तो किरण की क्या जाति हो सकती है? सूरज की भी वही **जाति** है जो किरण की है। जब परमात्मा की कोई **जाति–पाति** नहीं तो हमारी

आत्मा की क्या जाति हो सकती है? इसलिए सन्त–महात्मा कहते हैं कि आप अंदर जाकर अपनी आत्मा से सारे पर्दे उतारकर पारब्रह्म में पहुँचकर देखें कि आत्मा की क्या जाति है, क्या मजहब है? गुरु साहब कहते हैं:

कहाँ करो जाति कहाँ करो पाति राम का नाम जपो दिन–राती।

आप **जाति–पाति** के झगड़े खड़े करके एक–दूसरे के खून के प्यासे हैं। परमात्मा ने जाति–पाति बनाकर या किसी पर कोई लेबल लगाकर नहीं भेजा कि तू हिन्दू है या सिक्ख है। हमारे पेशे से इन जातियों के नाम पड़ जाते हैं, लकड़ी का काम करने वाले को बड़ई कहने लग जाते हैं। लोहे का काम करने वाले को लुहार कहने लग जाते हैं। सोने का काम करने वाले को सुनार कहने लग जाते हैं। सच्चाई तो यह है आखिर में न किसी की कोई जाति है, न कोई किसी को पूछता है कि तू हिन्दू है, तुझे आवाज पड़ेगी या तू सिख है, तुझे परमात्मा नहीं मिलेंगे। बुल्लेशाह कहते हैं:

अमला उत्ते होण नबेड़े खड़ी रहण गिया जातां।

भाई, वहाँ तो अमल देखे जाएंगे, करतूत देखी जाएगी कि तू कितना अमल करता है, तेरी परमात्मा तक कितनी पहुँच है।

सन्त–महात्मा हमें बताते हैं कि मालिक के प्यारे सच्चखंड से आते हैं और वे हमारी तरह देह रखते हैं, कुटुम्ब–परिवार में भी रहते हैं, हमारी तरह ही खाते–पीते हैं लेकिन इतना कुछ करते हुए भी वे इनमें लिप्त नहीं होते। उनका कोई और स्वरूप भी है इसलिए उनका इस तरह का मिशन होता है जिस तरह लड़की की शादी हो जाती है तो वह मायके में रहते हुए भी अपना दिल पति के चरणों में लगाकर रखती है।

नामदेव जी महाराज कहते हैं कि जिस तरह गाय बाहर चरने के लिए जाती है लेकिन उसका ख्याल अपने बछड़े की तरफ होता है। इसी तरह सन्त–महात्मा जिस सागर में से आए होते हैं, उनका ख्याल सदा ही उस परमात्मा के साथ जुड़ा रहता है। गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज कहते हैं

''मेरा दिल तो संसार में आने के लिए नहीं करता था लेकिन मैं परमात्मा का हुक्म नहीं मोड़ सका, मेरी सुरत उनके चरणों में ही लगी रही।''

इसी तरह सन्त–महात्मा मालिक के प्यारे जब इस संसार में आते हैं तो वे खुद नहीं आते, उन्हें भेजा जाता है। आत्माओं को मालिक के साथ जोड़ने के लिए सन्त–महात्माओं को भेजा जाता है। सन्त–महात्मा हमें बताते हैं कि किस तरह परमात्मा से मिलना है। हम जिस दुनिया के लिए मारे–मारे फिरते हैं, दिन–रात दुनिया को अपना बनाने के लिए दौड़े फिरते हैं। यह सोचते हैं कि दुनिया चाहे भूखी मर जाए, सारी दुनिया का धन–दौलत हमारे घर ही आ जाए। हमारे ही बच्चे ठीक रहें, लोगों के चाहे कितने भी बीमार क्यों न हों लेकिन सन्त–महात्मा कहते हैंः

पर का बुरा न राखो चीत तुमको दुख न भाई मीत।

अगर आपने 'शब्द–नाम' में या दुनिया में तरक्की करनी है तो आप किसी का बुरा क्यों सोचते हैं अगर कोई बुराई करता है तो उसे सजा देने वाले परमात्मा हैं अगर कोई गलत काम करता है तो परमात्मा उसे उसकी गलती की सजा दे रहे हैं या देंगे। हम क्यों बुरा कर्म करें? हमारे सतगुरु महाराज कहा करते थे, ''अगर आप कीचड़ में कंकड़–पत्थर फैंकेंगे तो उसके छींटे आपके ऊपर ही पड़ेंगे।''

सन्त–महात्मा कहते हैं कि यह दुनिया असत्य है, इसके जितने भी पदार्थ हैं वे भी असत्य हैं, वे हमारे साथ नहीं जाएंगे। एक परमात्मा ही सत्य है, परमात्मा आदि–जुगादि से चले आ रहे हैं उनका कोई भाई, बहन और बंधु नहीं है। हम उनसे मिलना चाहते हैं, किस तरह मिलें? यहाँ आकर हम सब गलती खा जाते हैं।

सन्त–महात्मा हमें बताते है कि पढ़ा हुआ ही पढ़ा सकता है, जुड़ा हुआ ही जोड़ सकता है। जो परमात्मा के साथ जुड़ा है, वही हमें परमात्मा के साथ जोड़ सकता है। आपके आगे गुरु अर्जुनदेव जी महाराज का छोटा

सा शब्द रखा जा रहा है। हम दुनियादार लोग हमेशा ही आए हुए महात्माओं की कम कद्र करते हैं। जब वे संसार छोड़कर चले जाते हैं उस वक्त हम उनकी कद्र करना शुरु करते हैं, उनके नाम पर धूप जलाते हैं। इतिहास पढ़कर हमें शर्म आती है कि जब महात्मा आते हैं तो हम उनके साथ क्या व्यवहार करते हैं?

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज के सगे भाई ने उस वक्त की हुकूमत का साथ देकर उन्हें अमानवीय कष्ट दिलवाए। उनके सिर में गरम रेत डलवाया गया, उन्हें गर्म तवे पर बिठाया गया। सोचकर देखें कि आजकल के समय में हम आमतौर पर एयरकंडीश्नर में बैठते हैं। जो महात्मा हमारे ऊपर दया करने के लिए आते हैं, हमें परमात्मा के साथ मिलाते हैं, हम उन्हें बहुत कष्ट देते हैं। क्या हम इंसाफ करते हैं, मालिक के प्यारों के साथ हम इससे ज्यादा क्या बुरा करेंगे?

इसी तरह गुरु तेगबहादुर जी महाराज शान्ति देने के लिए, नाम के साथ जोड़ने के लिए आए, उन्हें चाँदनी चौक में कत्ल कर दिया गया। गुरु हरगोबिद को काफी अरसा ग्वालियर के किले में कैद रखा गया। गुरु नानकदेव जी महाराज को भी कैद करके उनसे चक्की चलवाई गई। परमात्मा ने क्राईस्ट से कहा, ''अगर तू कहे तो मैं इन्हें गर्क कर दूं, क्या सजा दूं?'' क्राईस्ट ने कहा, ''अगर आप दया करना चाहते हैं तो इन्हें बक्श दें, इन्हें पता नहीं कि मैं कौन हूँ और मेरे दिल में इनके लिए कितनी दया है, मैं इनके लिए कितना अच्छा सोच रहा हूँ?''

सन्त–महात्मा इतना कुछ सहन करते हुए भी परमात्मा के आगे अरदास करते हैं कि हे परमात्मा, तू इन्हें बक्श दे, इन भूले हुए जीवों को पता नहीं कि हम अपने लिए कितने बुरे काँटे बो रहे हैं। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज अपना तर्जुबा बयान करते हैं कि हमारे लिए इस संसार में पूजने के काबिल दो हस्तियां हैं–एक परमात्मा हैं और दूसरा गुरु हैं।

हमारे अंदर परमात्मा होते हुए भी हम कभी साँप बने, कभी बिच्छू बने। इंसान के जामें में आकर भी दुखी होते रहे। कभी गाय तो कभी भैंस के जामें में आए। कबीर साहब कहते हैं कि हमने ऐसे अनेकों ही घर बसाए, हमें माता के गर्भ में जाना पड़ा लेकिन जब तक गुरु नहीं मिले तब तक हम परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सके।

गुरु गोपालु गुरु गोविंदा।। गुरु दइआलु सदा बखसिंदा।

आप कहते हैं कि गुरु ही परमात्मा हैं, गुरु ही दया करते हैं। परमात्मा ने आज तक जिस पर भी दया की है, किसी न किसी सन्त–सतगुरु के जरिए ही की है, परमात्मा ने यह एक जरिया बनाया हुआ है। परमात्मा कुलमालिक हैं जो चाहे कर सकते हैं लेकिन उन्होंने अपनी दया का यही तरीका बनाया है। आप कहते हैंः

जुग जुग भक्त उपाया पैज रखदा आया।

परमात्मा युगों–युगों से अपने प्यारों को भेजते आए हैं, उनकी रक्षा करते आए हैं इसलिए वे दयाल हैं, बख्शिंद हैं, उनके अंदर बदले की भावना नहीं होती। मैं ऊपर बताकर आया हूँ कि बेशक दुनिया ने उन्हें कष्ट दिए फिर भी वे हमारे लिए दया लेकर आते हैं। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि परमात्मा हमारे गोपाल हैं और गुरु हमें बख्शते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

गुरु गोबिंद दोनो खड़े किसके लग्गू पाए।
बलिहारी गुरु आपणें जिन गोबिंद दिया मिलाए।।

आप कहते हैं कि सेवक अभ्यास कर रहा था गुरु आ गए और गोपाल भी आ गए। सेवक के दिल में ख्याल आया कि दोनों इकट्ठे आ गए हैं, मैं किसके पैर पकडूं। इतने में ख्याल आया कि अगर गुरु नहीं मिलते तो मैं गोबिंद को प्राप्त ही नहीं कर सकता था, गोबिंद तो पहले भी मेरे अंदर थे। गुरु नानकदेव जी महाराज भी कहते हैंः

बलिहारी गुरु आपणे दहो आणी सद वार।
जिन मानस ते देवते किए करत न लागी वार।

मैं साँस–साँस के साथ उन पर बलिहार जाता हूँ। शराब–कबाब खाने वाले राक्षस बुद्धि वाले जीव जब गुरु की शरण में गए तो गुरु ने उन्हें नाम देकर देवता बुद्धि बनाने में समय नहीं लगाया।

गुरु सासत सिमृत खटु करमा गुरु पवित्रु असथाना हे।।

हम हिन्दुओं में खट कर्म बहुत महानता रखते हैं। दान करना और दान लेना, विद्या पढ़नी और विद्या पढ़ानी, यज्ञ करना और यज्ञ करवाना और वेदों–शास्त्रों का पाठ करना भी हमारे समाजों में जरूरी समझा गया है। हम सोचते हैं कि अगर हम पूजा पाठ करेंगे तो हम मुक्त हो जाएंगे लेकिन गुरु अर्जुनदेव जी महाराज का ख्याल बहुत ऊँचा है। आप कहते हैं कि जब हम गुरु को अंदर प्रकट कर लेते हैं तो हमारे खट कर्म भी हो जाते हैं और सारे वेद–शास्त्रों का पाठ भी हो जाता है। जो समुंद्र में स्नान कर लेता है, उसका सब नदी–नालों में स्नान हो जाता है क्योंकि नदी–नाले समुंद्र में जाकर ही समाते हैं।

गुरु राजी तो करता राजी, कर्म काल की चले न बाजी।
गुरु की पूजा में सबकी पूजा, जस समुंद्र नदी समाजा।

जिस तरह सब नदियां समुंद्र में समा जाती हैं उसी तरह गुरु–परमात्मा की पूजा में सबकी पूजा आ जाती है। महात्मा हमें बताते हैं कि हम स्थूल शरीर में बैठे हैं लेकिन कमाई के बिना हमारी समझ में नहीं आता। हम सोचते हैं कि जैसे हम इंसान हैं, वैसे ही ये हमारी तरह हैं। हम अच्छा बोल सकते हैं, हम अच्छे पढ़े–लिखे हैं, हमारी बुद्धि चैतन्य है लेकिन इसमें बड़ा भेद है। एक पढ़ा हुआ है, दूसरा अनपढ़ है। दोनों ही इंसान की शक्ल रखते हैं लेकिन अंदर उनकी क्लासिफिकेशन का बहुत फर्क होता है।

जीव हमेशा ही विषय–विकारों में लिपटे रहते हैं। महात्मा प्योर और पवित्र होते हैं, उनमें और हमारे में बहुत फर्क होता है। हम सोते हैं वे भी सोते हैं लेकिन हम दुनियादारों की सुरत नीचे इन्द्रियों के घाट पर आ जाती है, हमें बुरे सपने आते हैं। हमें सोते हुए भी चैन नहीं शान्ति नहीं लेकिन उस समय महात्मा की सुरत मन–इन्द्रियों के घाट की बजाय ऊपर के मंडलों में जाती है।

सोए जागे रहे उताणे कहे कबीर हम वही टिकाणे।

उनके सोने और जागने में कोई फर्क नहीं होता। महात्मा का शरीर सोता है लेकिन आत्मा नहीं सोती। जब हम उन्हें सोता हुआ समझते हैं तो उस समय वे किसी को सतसंग सुना रहे होते हैं, किसी की संभाल कर रहे होते हैं। आप प्यार से कहते हैंः

सतगुरु जागता है सुत्ती भाई।

सारी दुनिया मोह की मीठी नींद में सोई हुई है, प्रभु के प्यार में सिर्फ सतगुरु ही जागते हैं क्योंकि वे जाग उठे होते हैं।

इसलिए आप प्यार से कहते हैं कि गुरु जिस जगह रहते हैं, वह बहुत ही पवित्र स्थान है। गुरु सच्चखंड से आते हैं, हमें नाम देते हैं और नाम के साथ जोड़ते हैं। जैसे–जैसे सेवक तरक्की करता है स्थूल शरीर छोड़कर सूक्ष्म में जाता है तो सूक्ष्म रूप धारण करता है अगर कारण में जाता है तो कारण रूप धारण करता है। सतगुरु का स्थान सच्चखंड है, वे सच्चखंड से ही आते हैं। सच्चखंड बहुत पवित्र स्थान है वहाँ मैं–मेरी नहीं, कोई दुख नहीं, वह शान्ति का देश है। कबीर साहब कहते हैंः

दिन स्यों रैण वेद नहीं शास्त्र जहाँ बसे निरंकारा।
कहे कबीर नर तिसे ध्याओ बाबरया संसारा।।

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि गुरु ही हमारे वेद–शास्त्र हैं। कबीर साहब भी यही कहते हैं कि उस मुल्क सच्चखंड में न कोई वेद–

शास्त्र है और न किसी मुल्क की भाषा ही है। वह जगह पवित्र है, जो वहाँ पहुँच जाते हैं वे भी पवित्र हो जाते हैं।

गुरु सिमरत सभि किलबिख नासहि।। गुरु सिमरत जम संगि न फासहि।।

अगर हम सच्चे दिल से गुरु का नाम जपते हैं तो काल की शक्तियां काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार कोई भी पर नहीं मार सकती। महात्मा हमें कहते हैं कि आप अंदर जाएं अगर हम अंदर जाएं ही नहीं, वे जो कहते हैं वह करें ही नहीं तो इसमें महात्मा का क्या कसूर है। हम डाक्टर से दवाई लाकर उसे खाएं नहीं तो उसमें डाक्टर का क्या कसूर है। जब डाक्टर दवाई देता है तो वह कुछ परहेज भी बताता है इसी तरह जब सन्त–महात्मा नाम देते हैं तो वे 'शब्द–रूप' होकर हमारे अंदर बैठ जाते हैं। वे हमें कुछ हिदायतें भी बताते हैं कि प्यारे बच्चो, अगर आप इस तरह करेंगे तो काल की कोई भी शक्ति आपको तंग नहीं कर सकती।

गुरु सिमरत मनु निरमलु होवै गुरु काटे अपमाना हे।।

दुनिया के किसी पानी में यह ताकत नहीं कि वह हमारे मन को निर्मल कर दे, मन को गुरु के दिए हुए सिमरन ने निर्मल करना है। गुरु हमें किताबों में से या किसी का सुना–सुनाया सिमरन नहीं देते। पूरे महात्मा अपना कमाया हुआ नाम देते हैं। किसी प्रेमी ने महाराज सावन सिंह जी से यह बात की कि फलां आदमी ने सिमरन सुन लिया है। उन्होंने हँसकर कहा, ''देखो भई प्यारेयो, अगर कुत्ता कपास के खेत में से निकल जाए तो वह सूट नहीं बनवा सकता, झाड़ेगा तो मालिक के खेत में ही झाड़ेगा।''

इसलिए आप प्यार से कहते हैं कि नाम लफ्ज नहीं महात्मा की तवज्जो होता है, तवज्जो से ही महात्मा हमारी सुरत को अंदर खींचते हैं। उनके लिए दूर या नजदीक का कोई फर्क नहीं होता। मन को पवित्र करने की दवाई गुरु का दिया हुआ सिमरन है, सिमरन झाड़ू का काम करता

है। जिस तरह हम झाड़ू से मकान को साफ करते हैं उसी तरह अगर हम दुनिया का सिमरन छोड़कर सतगुरु का दिया हुआ सिमरन करें तो हमने अंदर जितना भी कूड़ा करकट इकट्ठा किया है, वह सारा ही बाहर निकल जाता है, मन पवित्र हो जाता है।

गुर का सेवकु नरकि न जाए।। गुर का सेवकु पारब्रहमु धिआए।।

आप प्यार से कहते हैं कि नर्कों की आग से सारे ही डरते हैं, कोई भी छाती पर हाथ रखकर यह नहीं कह सकता कि मैं तेरा जिम्मेदार हूँ या तुझे नर्क से बचा लूंगा। यह सिर्फ सतगुरु की दया ही होती है। अनेकों प्रेमियों के पत्रों और तारों से पता चलता है कि किस तरह सतगुरु सात समुंद्र पार भी अपनी प्यारी आत्माओं की संभाल कर रहे होते हैं। यहाँ तक जिन्हें नाम नहीं मिला होता लेकिन उन्होंने घर में गुरु के बारे में सुना होता है, गुरु के साथ थोड़ा बहुत प्यार किया होता है। उन्होंने अस्पताल में मरीज की चारपाई के पास गुरु की कोई तस्वीर लगाई होती है। अनेकों सतसंगी जब इंटरव्यू में मिलते हैं, वे कहते हैं कि हमने वहाँ गुरु की मौजूदगी महसूस की लेकिन उसे नाम नहीं मिला था।

प्यारेयो, सन्त–सतगुरु की दया होती है कि वे जीव को यमों के हवाले नहीं होने देते। अगर बादशाह का बच्चा कोई कसूर करता है तो बादशाह उसे कानून के मुताबिक सजा जरूर देता है इसी तरह अगर जीव सतगुरु के कहे मुताबिक ख्याल पवित्र नहीं करता, बुरे कर्म करता है तो सतगुरु उसे संसार में जन्म जरूर देगें लेकिन यमों के हवाले नहीं होने देते।

गुर का सेवकु साध संगु पाए गुर करदा नित जीअ दाना हे।।

मैंने शुरु में ही बताया था कि जब हम गुरु के सेवक बन जाते हैं, अपनी आत्मा से स्थूल–सूक्ष्म के सारे पर्दे उतार देते हैं, मन–माया और पच्चीस प्रकृतियों के खोल उतार लेते हैं, पारब्रह्म में पहुँचकर ही हम गुरु

के सच्चे सेवक बनते हैं। उस जगह जाकर हमारी साध गति हो जाती है फिर हमें हमेशा ही मालिक के प्यारों की संगत और सोहबत अच्छी लगती है। सच्चाई तो यह हैः

गल्ल न करन यार दी जित्थे ओह सभा दरकार नहीं।

ऐसे प्रेमी की ऐसी हालत हो जाती है कि जिस जगह उसके गुरु की कोई बात न होती हो, वह उस सभा में बैठना ही नहीं चाहता। वह उस जगह ही जाता है जहाँ उसके गुरु की महिमा होती है। किसी औरत या मर्द का प्यार होता है हाँलाकि यह दुनियावी प्यार होता है, आप देख लें कि बहाने से हम उनको भी याद करते हैं। अगर शिष्य अंदर जाकर सेवक बन जाए तो क्या वह गुरु को भूल जाएगा? जो लोग यह कहते हैं कि हम सिमरन नहीं कर सकते, अभ्यास नहीं कर सकते, उनमें यही कमी है कि उन्होंने देखा-देखी नाम तो जरूर ले लिया लेकिन वे कमाई नहीं करते। कमाई न करने की वजह से बहानेबाजी शुरू हो जाती है हाँलाकि सन्त-महात्मा प्यार से कहते हैं कि आप करके तो देखें, आप सेवक बनकर तो देखें कि सेवक को क्या मान मिलता है।

गुर दुआरै हरि कीरतनु सुणीऐ।। सतिगुरु भेटि हरि जसु मुखि भणीऐ।।
कलि कलेस मिटाए सतिगुरु हरि दरगह देवै मानां हे।।

हम उसे कीर्तन या आवाज कह लें क्योंकि वह परमात्मा हमारे अंदर जोत रूप और नाद रूप होकर बैठे हैं, अपना प्रकाश और अपनी आवाज भी हमारे अंदर रखते हैं। किसी महात्मा ने उसे हरि कीर्तन, किसी ने उसे अकथ कथा और किसी ने उसे सबसे ऊँची बाँग तो किसी ने उसे आकाशवाणी कहा है कि वह बाणी सच्चखंड से आ रही है।

महात्मा कहते हैं कि वह अखंड कीर्तन माता के पेट से पैदाईश होने के समय से लेकर मौत तक बंद नहीं होता। हम उस कीर्तन को तभी सुन सकते हैं जब सतगुरु की शरण में जाकर नामदान प्राप्त करते हैं। वह

कीर्तन हम गुरुओं के द्वारे होकर ही सुन सकते हैं। गुरु नानकदेव जी ने उसे कहीं सच्ची बानी, कहीं हरि कीर्तन, कहीं अकथ कथा और कहीं धुर की बानी कहा है। आप कहते हैंः

अंतर जोत निरंतर बानी सच्चे साहिब स्यों लिव लाई।

बानी सबके अंदर है, सबके अंदर रामनाम की जोत जल रही है। जो महात्मा उस बानी को सुनते हैं, वे यह नहीं कहते कि बानी एक आदमी के अंदर है या धर्मग्रंथों के अंदर है बल्कि वे कहते हैंः

पूरे गुरु की बानी सब माहे समानी आप सुनी ते आप बखानी।

जिस बानी का जिक्र गुरु साहब करते हैं वह बानी पशु, पक्षी, इंसान, हैवान हर एक के अंदर समाई हुई है, सबको जीवन दे रही है। महात्मा अंदर जाकर उस बानी या कीर्तन को सुन रहे हैं और हमें भी उसे सुनने का साधन और तरीका बताते हैं। वह आवाज सच्चखंड से उठकर हम सबके माथे के पीछे धुनकारे दे रही है। जब हम उस आवाज को पकड़कर सच्चखंड पहुँच जाते हैं तो प्रभु हमें अपने गले लगाकर मान दे देते हैं।

अगमु अगोचरू गुरु दिखाइआ।। भूला मारगि सतिगुरि पाइआ।।
गुर सेवक कउ बिघनु न भगती हरि पूर दृढ़ाइआ गिआनां हे।।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि यह काम वंशावली गुरु नहीं कर सकते, यह तो कमाई वाले महात्मा का ही करतब है, बातों का मजबून नहीं। गुरु हमें अगम जहाँ किसी की गमता नहीं, अगोचर जो हम इन आँखों से देख नहीं सकते, वह रास्ते में दिखाते हैं। सेवक सदा भूलते आए हैं, सतगुरु हर मंजिल पर सेवक के साथ हैं और सेवक को रास्ता दिखाते हैं कि बेटा ये काल के मंडल हैं और ये दयाल के मंडल हैं।

अंदर जाकर पता चलता है कि काल ने किस तरह अंदर जीवों की डोरियां छिपाकर रखी हुई हैं और काल ने किस तरह अंदर भूल–भुल्लेया

बनाई हुई हैं। हम इस दुनिया में जहाँ दौड़े फिरते हैं अगर पता न हो तो हम पैर–पैर पर भूलते हैं, एक–दूसरे से पूछते हैं कि यहाँ से मुम्बई को कौन सी सड़क जाएगी या हमने राजस्थान जाना हो तो कौन सा रास्ता जाएगा? अगर हम उस रास्ते पर पहले से ही जाते–आते हैं तो हम अपनी कार को दौड़ाते चले जाएंगे, हमें रूकने की जरूरत नहीं।

काल की शक्ति गुरु के सेवक को विघ्न नहीं डाल सकती क्योंकि सतगुरु ने उसे पूरा रास्ता पूरा नाम दिया हुआ है। पूरे गुरु हमेशा ही साथ होते हैं। पूरे गुरु यह नहीं कहते कि आप अकेले अंदर जाएं वे कहते हैं कि आप करके देखें, मैं पहले ही तेरे साथ खड़ा हूँ। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि जिस तरह बच्चा स्कूल न जाए, घर बैठकर ही अरदास करता रहे कि आप मुझे पास करें लेकिन मैं पढ़ना नहीं चाहता। आप उस बच्चे से क्या उम्मीद कर सकते हैं कि क्या उसकी अरदासें उसे पास कर देंगी? जहाँ वह अरदासें करता है और धूप जलाता है वहाँ उसका यह हक भी बनता है कि वह हिम्मत करके स्कूल जाए। बच्चा स्कूल जाएगा तो उसका उस्ताद उसे कहेगा पढ़ भई तो वह पास होने की उम्मीद कर सकता है, पास हो भी जाता है, मेहनती बच्चे सदा ही पास होते आए हैं।

इसी तरह हमारा स्कूल दोनों आँखों के दरमियान है, यही सच्चखंड जाने का रास्ता है। सेवक का यह काम है कि वह बाहर धूप जलाने और विनतियां करने की बजाय हिम्मत करके फैले हुए ख्याल को सिमरन के जरिए तीसरे तिल पर लाए, इस जगह आकर उसे पता चलता है कि पूरे गुरु उसे पहले ही वहाँ मिलेगें और वे कहेंगे, ''पकड़ धुन चल ऊपर।'' पूरे गुरु का यही काम है, गुरु के सेवक को काल की कोई शक्ति तंग नहीं करती क्योंकि पूरे गुरु का प्यार भरा हाथ सेवक के सिर पर है।

गुरि दृसटाइआ सभनी ठांई।। जलि थलि पूरि रहिआ गोसाई।।
ऊच ऊन सभ एक समानां मनि लागा सहजि धिआना हे।।

सन्त–महात्मा न तो किसी की निन्दा करते हैं और न ही अपने सेवकों को निन्दा करने की इजाजत देते हैं। वे यह नहीं कहते कि हम अच्छे हैं और दूसरे लोग बुरे हैं। कमाई वाले महात्मा के दिल में कभी ऐसी बात नहीं आएगी। जिसके दिल में यह है कि मैं सही हूँ और दूसरा गलत है, मालिक उसका पर्दा नहीं खोलते और उसे अपने घर में जगह नहीं देते।

जो पूरे गुरु के बताए उपदेश पर चलते हुए कमाई करते हैं तो उन्हें गुरु अपने गले से लगा लेते हैं। उन्हें जल में, थल में हर जगह परमात्मा दिखाई देते हैं। हम जुबान से तो कह लेते हैं कि एकता करो लेकिन खुद उस एकता पर नहीं चलते। सोचकर देखें, हम खुद झूठ बोलते हैं और लोगों को भी धोखा देते हैं। क्या कभी बाहर एकता हुई? एकता हमारे अंदर नहीं है।

हमारा मन विषय–विकारों की तरफ जाता है और आत्मा प्रभु को प्राप्त करना चाहती है, कोई इन्द्री हमें खट्टे–मीठे स्वादों में लेकर जाती है। जब हमारे अंदर एकता नहीं तो हम दुनिया में एकता कैसे कर सकते हैं। बेशक समाजिक लोग दिन–रात एकता का प्रचार कर रहे हैं लेकिन कितनी एकता होती है? हम जितना ज्यादा जोर देते हैं उतना ही हनेकों समाज और बन जाते हैं।

सच्चाई तो यह है कि एकता सन्त–महात्माओं की संगत और सोहबत में जाकर ही आती है फिर हमें पता चलता है कि परमात्मा एक हैं, वह सबके अंदर हैं और अंदर से ही मिल सकते हैं, परमात्मा छोटे–बड़े सबके हैं। गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैं कि वह हाथी कि चिंघाड़ तो बाद में सुनता है, चींटी की पुकार पहले सुन लेता है।

सोचकर देखें कि हम दिन–रात गाय, भैंस, भेड़, बकरी का कत्ल करने में लगे हुए हैं, इन्हें अपनी खुराक बना रहे हैं। क्या कभी सोचा है कि परमात्मा इनमें भी हैं। हो सकता है कि ये कभी हमसे अच्छे इंसान हों लेकिन आज कर्मों की वजह से इन योनियों में आ गए हैं फिर हम दावा

करते हैं कि हम रब के प्यारे भक्त हैं। जब हम परमात्मा के दर पर जाते हैं तो पता चलता है कि हम कितने भक्त हैं? गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

उघड़ गया वो खोटा डबुआ जब नदर सर्राफा आया।

गुरु से मिलने का यह फायदा है कि वह हमें बताते हैं कि जल की मछली में भी परमात्मा है, उड़ते हुए पक्षी में भी परमात्मा है। महात्मा का प्यार हर एक के साथ होता है।

महाराज सावन सिंह जी एक कहानी सुनाया करते थे कि एक आदमी हज को जा रहा था। उसने रास्ते में एक मस्जिद में रात काटी, उसके पास खाना था। खाने पर रात को चींटियां चढ़ गई, उसने दस–बारह मील जाकर खाने का ख्याल किया तो उसने देखा कि खाने के ऊपर तो बहुत सारी चींटियां हैं। वह कमाई वाला था, उसने सोचा कि इनमें से कोई अपने अंडे छोड़ आई है, कोई बच्चे छोड़ आई है अगर मैंने यहाँ रोटियां झाड़कर खाना खाया तो ये सारी अपने बच्चों से बिछड़ जाएंगी। मैं क्यों न इन्हें वहाँ छोड़ आऊं? उसने वहाँ से बारह मील वापिस आकर अपनी रोटियों को झाड़ा ताकि ये चींटियां अपने बच्चों से मिल लें। महाराज जी कहा करते थे, ''जिनका परमात्मा के साथ प्यार है, उनका परमात्मा के जीवों के साथ भी प्यार है।''

गुरि मिलिऐ सभ तृसन बुझाई।। गुरि मिलिऐ नह जोहै माई।।
सतु संतोखु दीआ गुरि पूरै नामु अमृंत पी पानां हे।।

अगर हम सन्तों के दिए हुए नाम की कमाई करके अंदर चले जाते हैं तो हमारा मन जो हमें दिन–रात हिरन की तरह बाहर भटकाता है, उसकी सारी तृष्णा खत्म हो जाती हैं, अंदर सत संतोख आ जाता है।

जिस नू कछु न चाहिए सोई शहन्शाह।

वही शहन्शाह है जिसे किसी चीज की जरूरत नहीं। नाम को प्राप्त करके हमारे अंदर संतोष आ जाता है, सब्र आ जाता है। नाम के साथ जुड़ने का यही फायदा है।

महाराज सावन सिंह जी एक कहानी सुनाया करते थे कि अमीर खुसरो मुल्तान के बादशाह का नौकर था। अमीर खुसरो निजामुद्दीन औलिया का शिष्य था। उसके दिल में ख्याल आया कि आखिरी उम्र अपने गुरु निजामुद्दीन औलिया के चरणों में बिताई जाए। उसने रिटायरमेंट ले ली और धन ऊँटों पर लाद लिया, उस समय चाँदी की करंसी होती थी। वह दिल्ली की तरफ चल पड़ा।

निजामुद्दीन औलिया का एक सेवक था, जिसके दिल में ख्याल आया कि लड़की की शादी करनी है, सन्तों के पास काफी लोग आते–जाते हैं, काफी चढ़ावा देते होंगे, चलो हम उनसे पैसे ले आएं। हम लोगों को बहुत वहम होता है लेकिन हमें यह पता नहीं होता कि महात्मा का लंगर कितनी मुश्किल से चलता है, सतगुरु कितनी दया से लंगर चलाते हैं। हम लोग तो अपने ही अंदाजे लगाते हैं कि यहाँ इतने आदमी आते हैं पता नहीं कितना कुछ देकर गए होंगे।

वह सेवक भी ऐसे ही ख्याल लेकर निजामुद्दीन औलिया के पास चला गया और उनसे कहा, ''पीर जी, मैंने लड़की की शादी करनी है, कुछ दें।'' निजामुद्दीन औलिया ने कहा, ''कोई बात नहीं लंगर तो चलता ही है तू हमारे पास बैठ जा, शाम तक जितना चढ़ावा आएगा वह तू ले जाना।'' अब वहाँ किसने चढ़ावा देना था, वह शाम तक बैठा रहा, अगले दिन भी बैठा और तीसरे दिन भी बैठा रहा। आखिर उसने सोचा कि जब परमात्मा ही न दे तो फकीरों ने क्या देना है।

वह टूटा हुआ दिल लेकर वहाँ से चलने लगा तो निजामुद्दीन औलिया ने कहा, ''प्यारेया, मेरे पास यह जूती है, तू मेरी जूती ले जा।'' उस

सेवक के दिल में ख्याल आया कि फकीर नंगे–भूखे होते हैं, इन्होंने क्या देना है अगर मैंने ये जूती छोड़ दी तो कहीं मुझे बद्दुआ न दे दें। वह जूती उठाकर वहाँ से चल पड़ा। आगे रास्ते में उसे अमीर खुसरो मिला। जैसे–जैसे वह सेवक अमीर खुसरो के नजदीक आ रहा था, उसे अपने मुर्शिद की खुशबू आने लगी। उसके दिल में ख्याल आया कि मुर्शिद का आश्रम तो दूर है लेकिन मुर्शिद की खुशबू आ रही है, यह क्या बात है? आखिर जैसे ही वह सेवक नजदीक से निकला तो खुशबू पीछे से आनी शुरु हो गई।

अमीर खुसरो के दिल में ख्याल आया कि जो राज है वह इस बंदे के पास ही है। अमीर खुसरों ने उसे बुलाकर पूछा, ''प्यारेया, तू कहाँ से आया है और तूने कहाँ जाना है?'' उसने अपनी हालत बताई कि मैंने अपनी लड़की की शादी करनी है, मुझे यह ख्याल था कि निजामुद्दीन

औलिया मुझे लड़की की शादी के लिए कुछ पैसे देंगे लेकिन जब परमात्मा कुछ न दे तो फकीरों ने क्या देना है, ये तो आप नंगे भूखे होते हैं। अमीर खुसरो खामोश रहा।

अमीर खुसरो ने उससे पूछा, ''उन्होंने तुझे कुछ दिया भी?'' उस सेवक ने कहा, ''उन्होंने अपनी टूटी हुई जूती दी है, मैंने सोचा अगर जूती नहीं उठाई तो कहीं वे मुझे बद्दुआ न दे दें।'' अमीर खुसरो ने उससे पूछा कि तूने इन जूतियों की कितनी कीमत लेनी है? जिसका भरोसा ही नहीं था तो वह क्या कीमत बताता। सेवक ने कहा कि आप कुछ भी दे देवें। अमीर खुसरो ने कहा कि मैं इसकी कीमत तो नहीं चुका सकता लेकिन मेरे पास जो कुछ है, मैं वह सब कुछ दे सकता हूँ। अमीर खुसरो ने अपने बीवी और बच्चों के लिए धन का एक ऊँट रख लिया बाकी सारे ऊँट उस सेवक के हवाले कर दिए।

अमीर खुसरो अपने मुर्शिद की जूतियां सिर पर उठाकर निजामुद्दीन औलिया के पास पहुँचा और जूतियां उनके आगे रखकर कहा, ''आप इन्हें पहनें।'' निजामुद्दीन औलिया ने पूछा, ''तूने ये जूतियां कितने में खरीदी हैं?'' अमीर खुसरो ने कहा कि मैं इनका कुछ नहीं दे सकता था लेकिन मेरे पास जो था मैंने वह उसे दे दिया। उसने मुझ पर दया की कि जूतियां मुझे दे दी। वह अंदर जाता था उसे तृष्णा नहीं थी इसलिए उसका गुरु के साथ प्यार था। उसे पता था कि गुरु कुलमालिक हैं। बुल्लेशाह कहते हैंः

गुरु जो चाहे सो करदा है गुरु खाली भांडे भरदा है।

अगर हम सब इस ख्याल को समझ जाएं तो हम सभी कुंदन हो जाएं। एक महात्मा कथा करता था, वह बिल्ली के सिर पर दीपक रख देता था। उसने बिल्ली को बहुत प्रैक्टिस करवाई थी कि जब तक कथा होती रहे तब तक वह किसी भी तरफ नहीं जाती थी। हर आदमी का यह ख्याल हुआ कि पता नहीं इस महात्मा की कितनी सिद्धी होगी कि जानवर भी

इसके वश में है। बिल्ली इधर–उधर सिर नहीं हिलाती थी, तेल का भरा हुआ दीपक उसके सिर पर जलता रहता था।

भोलों के बीच चतुर भी होते हैं। एक चतुर ने सोचा कि इस बिल्ली को चूहा दिखाएं फिर यह बिल्ली भागती है या नहीं। चतुर आदमी पिंजरे में चूहा पकड़कर उसे ढ़ककर वहाँ ले गया। कथा हो रही थी प्रेमी लोग प्यार से कथा सुन रहे थे, अपने ध्यान में मग्न थे। उस चतुर आदमी ने धीरे से पिंजरे से कपड़ा उठा दिया। जब बिल्ली की नजर चूहे पर पड़ी तो वह चूहे की तरफ झपटी, तेल का दीपक गिर गया और वहाँ अंधेरा हो गया। सब लोग कहने लगे कि आज तक तो यह बिल्ली कभी नहीं झपटी थी, इसने तेल नहीं गिराया था तो आज इसे क्या हो गया। चतुर आदमी ने कहा, ''बिल्ली उतनी देर ही महात्मा थी जब तक इसने चूहा नहीं देखा था।''

हमारी भी यही हालत है, हम जब तक जुबान से बात करते हैं, अंदर नहीं जाते, तब तक ही तृष्णा से बचे हुए है। जब बिल्ली की तरह चूहा नजर आता है फिर पता चलता है कि हम कितने अच्छे आदमी हैं हमारे अंदर से कितनी तृष्णा गई हुई है। अगर हम अंदर जाएं, 'शब्द' को प्रकट कर लें तो हमारे अंदर सब्र–संतोष आ जाता है।

गुर की बाणी सभ माहि समाणी।। आपि सुणी तै आपि वखाणी।।
जिनि जिनि जपी तेई सभि निसत्रे तिन पाइआ निहचल थाना हे।।
सतिगुर की महिमा सतिगुरु जाणै।। जो किछु करे सु आपण भाणै।।
साधू धूरि जाचहि जन तेरे नानक सद कुरबानां हे।।

गुरु अर्जुनेदव जी महाराज ने हमें इस छोटे से शब्द में समझा दिया कि हमारा गुरु के साथ परमार्थ का रिश्ता है, हम गुरु को परमात्मा समझते हैं। हम गुरु और परमात्मा में फर्क नहीं समझते अगर गुरु न मिलते तो हम परमात्मा को प्राप्त ही नहीं कर सकते थे।

आप प्यार से कहते हैं कि जब गुरु मिल जाते हैं और हम अंदर जाकर 'शब्द–नाम' की कमाई करते हैं तो हमारे अंदर हिरन की तरह भटकते हुए मन को शान्ति आ जाती है। सबसे पहले हमें सोचना चाहिए कि महात्मा हमें 'शब्द–नाम' का भेद देते हैं तो हमें कमाई करनी चाहिए। जब हम कमाई करते हैं, फैले हुए ख्याल को आँखों के पीछे ले आते हैं तो हमारे मन को सब्र–संतोष आ जाता है।

हमारा जानी दुश्मन मन हमारे अंदर बैठा है जिस तरह बिल्ली ने चूहे को देखकर झपट मारी। पता नहीं इस मन ने हमें किस तरफ गिरा देना है, किस समय विषय–विकारों में जलील कर देना है। जब तक हम अंदर नहीं जाते तब तक बेखबर नहीं हो सकते क्योंकि दुश्मन तो हमारे घर के अंदर है। पता नहीं उसने किस समय हमें पकड़ लेना है, धोखा दे देना है।

हमें भी चाहिए कि हम गुरु अर्जुनदेव जी महाराज के कहे मुताबिक 'शब्द–नाम' की कमाई करें और अपने जीवन को पवित्र बनाएं। परमात्मा ने हमें इंसानी जामा दिया है, इसका पूरा फायदा उठाएं। हमें लापरवाही नहीं करनी चाहिए।

दिवस गँवाया खेल के रात गवाई सोए, हीरे जैसा जन्म है कौडी बदले जाए।

हमें दिन दुनिया के धंधो में नहीं गंवाना चाहिए बल्कि परमात्मा का भी कुछ गुणगान करना चाहिए। हम रात सोकर बिता देते हैं, इस जन्म की तुलना हीरे से की गई है। हीरा तो हमें फिर भी किसी कीमत से मिल जाता है लेकिन इंसान का जामा किसी भी कीमत से नहीं मिलता।

राजा रणजीत सिंह के जीवन की एक घटना है कि एक भिखारी उनसे कुछ माँगने के लिए गया। भिखारी ने कहा कि आप महाराज हैं, मोती दान करते हैं। जैसा कि माँगने वाले का स्वभाव होता है, उसने काफी कुछ कहा। राजा रणजीत सिंह ने उससे पूछा कि तेरा क्या नाम है? उसने कहा, ''मेरा नाम तो कर्मदीन है लेकिन मैं कर्मों से हीन हूँ।'' रणजीत

सिंह ने उससे पूछा यह क्या बात है? मरासी ने कहा, ''मुझे परमात्मा ने कुछ नहीं दिया मेरे साथ बेइंसाफी की हैं।'' राजा रणजीत सिंह ने उसे काफी समझाया कि तुझे मेहनत करके कमाई करनी चाहिए, परमात्मा ने तुझे कमाई करने का मौका दिया है।

आखिर रणजीत सिंह ने भिखारी से कहा, ''परमात्मा ने तेरे ऊपर बहुत दया की है, तुझे दो आँखे दी हैं मुझे एक आँख दी है। तू मुझसे एक हजार रूपये लेकर मुझे अपनी एक आँख दे दे।'' भिखारी घबराया तो राजा रणजीत सिंह ने कहा, ''अगर एक हजार कम हैं तो मैं तुझे पाँच हजार दे देता हूँ।'' भिखारी के दिल में ख्याल आया कि यह राजा है, कहीं मेरी आँख न निकलवा ले। भिखारी के होश उड़ गए कि मैं इससे किस तरह जान छुड़वाऊं। राजा रणजीत सिंह ने कहा कि परमात्मा तो सबको देता है। तू एक अंग किसी भी कीमत पर मुझे देने के लिए तैयार नहीं तो उस परमात्मा ने तुझे कितने अंग मुफ्त में दिए हैं।

इसी तरह परमात्मा ने हमें अपना जीवन दिया है, खुद हमारी संभाल करने के लिए हमारे अंदर बैठ गए हैं। सतगुरु ने हमें अपनी आत्मा का दान–नामदान दिया है, अपना आप हमारे अंदर रखा हुआ है। हमारा भी फर्ज बनता है कि हम 'शब्द–नाम' की कमाई करके अपने जीवन को सफल बनाएं। यह जीवन किसी कीमत से नहीं मिलता। क्या परमात्मा ने हमसे किसी अंग का मूल्य माँगा है? वह हम सबको मुफ्त में ही दे देते हैं।

सन्त–सतगुरु अपनी तालीम और सारी जिंदगी की पूँजी नाम की कमाई हमें मुफ्त में देते हैं। हमारे ऊपर अहसान भी नहीं करते अगर कोई मुफ्त के सेवादार हैं तो वे मालिक के प्यारे होते हैं। हमारा भी फर्ज बनता है कि हम नाम की कमाई करके अपने जीवन को सफल बनाएं।

***

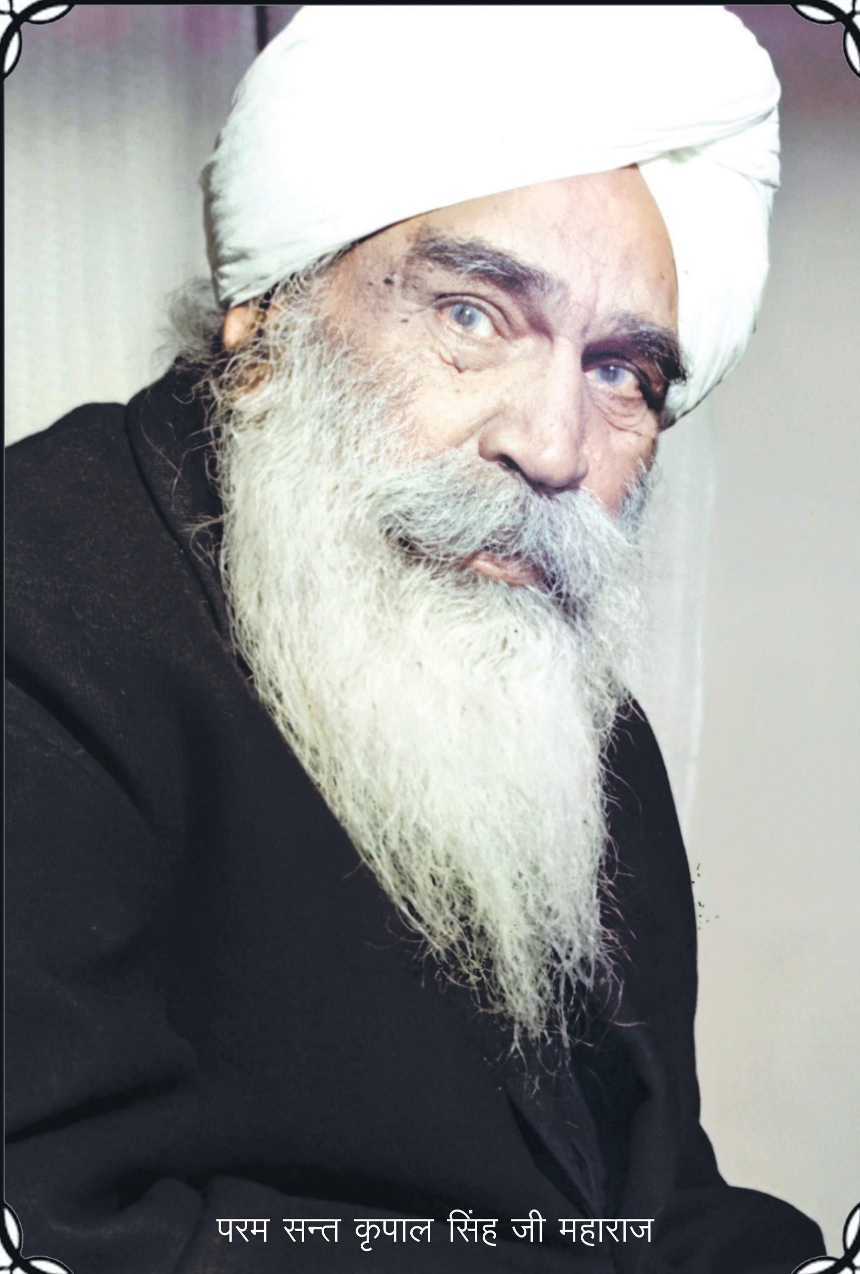
परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से...

सच्चा उपदेश

चाहे किसी विवाह का कार्यक्रम हो या क्रियाक्रम मैं अपने संपर्क में आए लोगों को यही समझाता हूँ कि हमने एक दिन यह शरीर छोड़ना है। चाहे हम इसके लिए तैयार हैं या नहीं तो फिर क्यों न इस अनमोल मौके का फायदा उठाएं और वह करें जो इंसानी जामें के अलावा और किसी जामें में नहीं किया जा सकता। क्यों न हम जरूरतमंदो और दुखियों की मदद करें।

किसी को कुछ देने से हम कुछ खोते नहीं। सच तो यह है कि हम परमपिता परमात्मा से उसके बदले में कई गुना ज्यादा पाते हैं। हम सब परमात्मा के बच्चे हैं, ऐसा करके हम अपने पिता की सच्ची रचना के साथ प्रेम कर रहे हैं। जिस हद तक मुमकिन हो अपनी दौलत और ज्ञान दूसरों के साथ बाँटें। आपके लिए दिन–रात, सुबह–शाम, दूर–नजदीक, पढ़ा–लिखा, दोस्त–दुश्मन या औरत–मर्द का कोई फर्क नहीं होना चाहिए। आप हर समय सबकी मदद करने के लिए तैयार रहें। आप हमेशा अपनी सारी संपत्ति बाँटने के लिए तैयार रहें क्योंकि ऐसा करके आप अपने परमपिता की सच्ची रचना से प्रेम कर रहे हैं। चाहे हम किसी भी रूप में किसी की मदद करें, हमें ईनाम की इच्छा नहीं रखनी चाहिए।

दुनिया का अपना तरीका है, अक्सर लोग ज्यादातर उनकी मदद के लिए तैयार रहते हैं जो पहले से ही अमीर हैं। आप जरूरतमंदों की मदद करें और ख्याल रखें कि आप जिसकी मदद कर रहे हैं, उसमें यह भावना नहीं आनी चाहिए कि मुझे कोई दे रहा है।

एक बार एक अखबार का रिपोर्टर मुझसे मिलने के लिए सावन आश्रम आया। रिपोर्टर की यह सोच थी कि मैं बहुत खर्चीला जीवन जीता हूँ। मैंने

उसकी तरफ ध्यान देकर कहा कि मैं बहुत साधारण तरीके का जीवन जीता हूँ। हो सकता है आपका खर्च मुझसे ज्यादा हो। आप आस-पास जो व्यवस्था देख रहे हैं, यह व्यवस्था बाहर से आने वाले लोगों के लिए है जिन्हें मैं सुखी देखना चाहता हूँ।

सन् 1946 में एक त्यागी साधु लाहौर में मेरे घर आया, उस समय मेरी पत्नी मायके गई हुई थी और मैं घर पर अकेला था। मैंने साधु से पूछा कि आप रात के खाने में क्या लेंगे? साधु ने जवाब दिया, ''मैं परमात्मा की रजा में खुश हूँ और मुझे कुछ नहीं चाहिए।'' मुझे भी कुछ नहीं चाहिए था। ऐसा कहने के बाद हम दोनों ने आपस में कई धार्मिक तत्वों पर विचार किया। वह साधु उसी कमरे में सो गया। मैं तीन घंटे तक कुछ लिखता रहा, उसके बाद मैं सो गया और सुबह जल्दी उठकर अभ्यास में बैठ गया।

अगले दिन सुबह मैंने उस साधु से पूछा कि उसे नाश्ते में क्या चाहिए? साधु ने वही बात दोहराई जो उसने पहले दोहराई थी। मैंने साधु से कुछ देर बात की और मैं आफिस चला गया। साधु ने कहा कि वह शाम को फिर आएगा। शाम को फिर वही बात हुई कि दोनों ने खाना नहीं खाया, अगली सुबह फिर यही हुआ। मैं आफिस चला गया और साधु कहीं और चला गया और वह शाम को वापिस लौट आया।

तीसरे दिन जब मैं घर आया तो साधु पहले से ही घर आया हुआ था। तब मैंने साधु से खाने के लिए पूछा तो उस साधु ने थकी आवाज में कहा, ''आपको कुछ चाहिए या नहीं लेकिन मुझे खाने के लिए जरूर कुछ चाहिए क्योंकि और भूख को सहन करना मेरे बस का नहीं है। मुझे पता नहीं कि आप किस चीज के बने हैं, बिना कुछ खाए सारा दिन आफिस में काम करते हैं बाकी समय अभ्यास में लगाते हैं।''

साधु ने कहा मुझे लगा कि शायद आप आफिस में खाना खाते होंगे लेकिन आज मैं आपके आफिस गया था तो मुझे पता लगा कि आप हमेशा

की तरह पानी के अलावा कुछ नहीं लेते। आप इतना लम्बे समय बिना खाना खाए कैसे रहते हैं? यह मेरे लिए कठिन परीक्षा थी। मैं आपको प्रभावित करने के लिए भूखा रहा। मैं साधु के लिए खाना लाया और मैंने उससे कहा, ''नाम पावर ही सबसे बड़ा खाना है।'' वह साधु मुझसे बहुत प्रभावित हुआ और उसने मुझसे माफी माँगी।

लाहौर की रहने वाली एक बुजुर्ग माता बहुत अच्छी अभ्यासी थी, उसे मेरे साथ बहुत लगाव था। वह माता अपने घर से बहुत लम्बा रास्ता तय करके मुझसे मिलने आती थी अगर वह कई दिनों तक मिलने न आ पाती तो वह अभ्यास में बैठ जाती और मैं अपने आप उससे मिलने चला जाता।

एक बार ऐसा हुआ कि वह माता कुछ दुनियावी कामों से निराश होकर उदास मन से अभ्यास में बैठ गई। वह दोपहर का समय था, मैं अपने आफिस से साईकिल चलाकर गर्मी में उस माता से मिलने गया और मैंने उससे कहा, ''अभ्यास में बैठकर याद करने से पहले समय और हालात का जायजा ले लिया करें।''

एक बार मैं अमृतसर टूर पर गया, मैंने पंजाब में कुछ जगह जाने के बाद उत्तर प्रदेश में भी कई जगह जाना था। अमृतसर पहुँचने पर मुझे अचानक अपना कार्यक्रम बदलना पड़ा क्योंकि एक प्रेमी अभ्यास में बैठकर लगातार मुझे याद कर रहा था इसलिए मुझे उसके पास जाना पड़ा। गुरु जानते हैं कि प्रेम की आग कहाँ जल रही है। गुरु अपने तय कार्यक्रम और अपने आराम की परवाह किए बिना अपने शिष्य के पास पहुँचते हैं।

बहुत बड़े राजनीतिज्ञ और सामाजिक लोग जो भी मेरे संपर्क में आए, वे मेरा प्रभाव महसूस किए बिना नहीं रह सके। मैंने औरत-मर्द, लड़का-लड़की, गरीब-अमीर और छोटे-बड़े सबको एक समान प्यार दिया। जो लोग मुझे मारना चाहते थे मैंने उन्हें भी वही प्यार दिया।

अप्रैल 1974 हरिद्वार में कुंभ मेले के अवसर पर मैंने सभी धर्मों के मुखिओं की एक सभा आयोजित की। इस मौके पर हिन्दु धर्म के एक मंडलेश्वर ने व्याख्या की कि वेदों, पुराणों, शास्त्रों और धर्मपुस्तकों में जो लिखा है वह बहुत सराहनीय है। मैंने उसकी पीठ थपथपाकर पूछा कि क्या यह आपका अपना अनुभव है? उसने कहा, ''इसमें मेरा अपना कोई अनुभव नहीं, यह सब सिद्धान्तों और किताबों का ज्ञान है।'' मैंने उस महानुभाव की तारीफ की कि उसने इतने सारे धार्मिक लीडरों के सामने सच मानने की ईमानदारी दिखाई।

मैं अक्सर यही सलाह दिया करता हूँ कि जिन्होंने इस इंसानी जामें की प्रयोगशाला में सच को प्रत्यक्ष नहीं देखा, उन पर भरोसा न करें। जिन्होंने खुद परमात्मा को नहीं देखा, वे दूसरों को किस तरह परमात्मा दिखा सकते हैं?

***

किड्स कॉर्नर — जाको राखे साईयां मार सके न कोए

एक समय की बात है कि एक हिरणी गर्भवती थी, वह आराम से सोई हुई थी। इस बारे में जब शिकारी को पता चला तो शिकारी ने जंगल में एक तरफ जाल टांग दिया कि अगर हिरणी इस तरफ भागेगी तो जाल में फंस जाएगी। दूसरी तरफ उसने अपना शिकारी कुत्ता खड़ा कर दिया, जो हिरणी को पकड़ सकता था। तीसरी तरफ उसने आग लगा दी कि अगर हिरणी इस तरफ आएगी तो आग में जल जाएगी और चौथी दिशा में शिकारी खुद तीर कमान लेकर खड़ा था।

जब हिरणी को आग की तपिश महसूस हुई और उसे पता चला कि आग लगी हुई है तो वह उठकर खड़ी हुई और उसने देखा कि एक तरफ जंगल में आग लगी हुई है, दूसरी तरफ कुत्ता खड़ा है, तीसरी तरफ शिकारी तीर कमान लेकर खड़ा है और चौथी तरफ जाल टंगा हुआ है। उस समय हिरणी ने परमात्मा को याद किया और फरियाद की कि एक तो मुझे प्रसव का दर्द है और अब उसके साथ एक दु:ख और आ गया। क्योंकि पशु–पक्षी भी अपनी जुबान से परमात्मा को ज़रूर याद करते हैं। मुसीबत के समय स्वाभाविक ही परमात्मा की तरफ ध्यान चला जाता है।

परमात्मा ने हिरणी की सहायता के लिए बहुत ज़ोर से तूफान चलाया। तूफान से आग उड़कर जाल पर गिर गई, जिससे जाल जल गया। जब शिकारी हिरणी पर तीर चलाने लगा, उसी समय एक सांप आया और उसने शिकारी को डस लिया। शिकारी का हाथ हिलने से तीर कुत्ते को जाकर लगा, हिरणी आज़ाद हो गई। शिकारी के सारे फंदे नाकाम हो गए। जाल जल गया, कुत्ता मर गया, शिकारी को सांप ने डस लिया।

इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि जो भी परमात्मा को याद करता है, चाहे पशु–पक्षी हो, उसकी रक्षा ज़रूर होती है। सभी जीव–

जंतुओं की डोरी परमात्मा के हाथ में है, वे अनाथों के नाथ हैं। परमात्मा जिसकी रक्षा करते हैं, उसे कोई ताकत मार नहीं सकती। इस संसार में कौन मरा हुआ है, जिसे परमात्मा विसार देते हैं, जिसे वे अपनी भक्ति का दान नहीं देते, जिसे वे अपना प्यार नहीं बख्शते।

हम खुशकिस्मत हैं कि परमात्मा ने हमें पूर्ण गुरु से मिलने का मौका दिया है। हमें इस मौके का पूरा फायदा उठाना चाहिए, भजन–सिमरन करके अपने जीवन काल में ही परमात्मा को पाने की पूरी कोशिश करनी चाहिए।

मिलान करें

A	B
1. मुड़ घर आजा ––––कृपाल वे, आ के देख लै संगत दा हाल वे	(A) दीवाना
2. गुरु कृपाल जी तेरा ––––	(B) सोहणे
3. आओ कृपाल प्यारे, दुःख दर्द विछोड़ा –––– दा	(C) सहारा
4. कृपाल गुरु आजा, (2) –––– पुकार दी, तेरे हत्थ विच चाबी ओ दाता, सारे संसार दी	(D) कृपाल
5. दीदार, दीदार,–––– कृपाल प्यारे दा, जो–जो वी बंदा कर जांदा, छुट्ट जांदा गेड़ चौरासी तों, भवसागर पार उतर जांदा	(E) संगत
6. तेरी –––– करे कृपाल सोचां क्यों करदैं	(F) दीदार
7. जिन्हां जपया ––––प्यारा, नरकां नू नहिओं जाणगे	(G) सोच
8. गुरु कृपाल मेरे घर आना, (2) जैसे तुम सावन दीवाने, मैं तेरा ––––	(H) पल–पल

सही उत्तर

1–B 2–C 3–H 4–E 5–F 6–G 7–D 8–A

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा भजन पर बिठाने से पहले

अनमोल वचन

10 जनवरी 1991 मुम्बई

जब आप परमात्मा की भक्ति करने की कोशिश करते हैं तब आप भजन में बैठते हैं। आप अभ्यास करने के लिए यहाँ आए हैं, मैं आपके साथ अभ्यास में बैठकर और परमात्मा का गुणगान करके बहुत खुश हूँ।

हम जिस जगह बैठकर सतसंग करते हैं, भजन-अभ्यास करते हैं वह जगह पवित्र हो जाती है। सिर्फ वही जगह पवित्र है जहाँ हम परमात्मा को याद करते हैं, अपने गुरु को याद करते हैं। हम जिस जगह सतसंग या भजन कर रहे हैं, हमें उस जगह को पवित्र मानना चाहिए। हमें इस पवित्र जगह पर ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए जो अपवित्र हो।

मेरे कहने का भाव यह है कि आप यहाँ कोई सांसारिक काम न करें। आप यहाँ पर सांसारिक वस्तुओं के बारे में न सोचें और न ही सांसारिक समस्याओं पर बातें करें। आप अपना घर और सब कुछ छोड़कर यहाँ आए हैं, जब यहाँ आए हैं तो सांसारिक वस्तुओं में न फँसें और न ही उसके बारे में लोगों से बात करें और न ही सुनें।

आप यहाँ सिर्फ भजन और सिमरन करें। आप खड़े हुए बैठे हुए और चलते-फिरते हुए या कुछ भी करते हुए गुरु को याद करें, हमेशा सिमरन करें ताकि इस जगह की पवित्रता और पावनता बरकरार रहे। ✻✻✻

धन्य अजायब

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान में सतसंग के कार्यक्रम :

07 सितम्बर से 12 सितम्बर 2026

02 अक्टूबर से 04 अक्टूबर 2026

30, 31 अक्टूबर व 01 नवम्बर 2026

04 दिसम्बर से 06 दिसम्बर 2026

RNI No - RAJHIN/2003/9899

हमें दिन दुनिया के धंधो में नहीं गंवाना चाहिए बल्कि परमात्मा का भी कुछ गुणगान करना चाहिए। हम रात सोकर बिता देते हैं, इस जन्म की तुलना हीरे से की गई है। हीरा तो हमें फिर भी किसी कीमत से मिल जाता है लेकिन इंसान का जामा किसी भी कीमत से नहीं मिलता।